काव्य हेतु

~ डॉ. अमरेन्द्र नाथ त्रिपाठी

(हिंदी विभाग, एसजीजीएस कॉलेज, पटना सिटी)

[कक्षा, स्नातक - तृतीय वर्ष (प्रतिष्ठा), में पढ़ाए गए को दुहराने (रिवीजन) के लिए यह आलेख]

काव्य हेतु का मतलब है कि काव्य के कारण क्या हैं? या काव्य-रचना के मूल में कौन सी वजहें हैं? आखिर कविता कैसे संभव हो पाती है? इस पर विचार करने के लिए संस्कृत काव्यशास्त्रियों में पर्याप्त मंथन हुआ है। इस विचार प्रक्रिया के बाद आचार्यों ने तीन कारणों की बात की है :

(१) प्रतिभा

(२) व्युत्पत्ति

(३) अभ्यास

इस तीनों में सबसे ज्यादा विचार प्रतिभा पर किया गया है। लेकिन अन्य कारणों की भी अनदेखी नहीं की गयी है।

प्रतिभा

प्रतिभा को काव्य रचने की शक्ति कहा गया है। इसीलिये प्रतिभा को काव्य हेतु के प्रसंग में 'शक्ति' नाम से भी जाना जाता है। आचार्य वामन ने प्रतिभा को कवित्व का बीज कहा है। उनका कथन है : कवित्वबीजं प्रतिभानम्।

प्रतिभा है, नयी-नयी बातों या वस्तुओं को प्रस्तुत कर पाने की प्रज्ञा। वह ख़ास बात जो सामान्य से अलग साबित करा देने की योग्यता रखे, प्रतिभा के अंतर्गत आती है। जिसके पास जितनी उत्कृष्ट प्रतिभा होगी, उसकी रचना भी उतनी ही उत्कृष्ट होगी।

© Dr. Amrendra N. Tripathi, SGGS College, Patliputra University

प्रतिभा के कारण रचना अद्वितीय हो जाती है। जैसे रामकथा तो कई कवियों ने लिखी लेकिन जो बात तुलसी दास के 'रामचरितमानस' में है अन्यत्र नहीं मिलती। यह तुलसी की प्रतिभा ही है जो उसे अद्वितीय बनाती है।

व्युत्पत्ति

व्युत्पत्ति का मतलब है ज्ञान। कवि को बहुत जानकारी होनी चाहिए। राजशेखर ने इसे बहुज्ञता कहा है। उनका यह भी मानना है कि 'उचित-अनुचित का विवेक ही व्युत्पत्ति है।' जाहिर है कि जो बहुज्ञ होगा उसके लिए उचित-अनुचित का विचार कर पाना आसान होगा।

व्युत्पत्ति दो तरह की होती है : लौकिक और शास्त्रीय। लौकिक व्युत्पत्ति चीजों को देखने-परखने या निरीक्षण से होती है जबकि शास्त्रीय व्युत्पत्ति अध्ययन करने से होती है। लोक और शास्त्र दोनों का ज्ञान जिस कवि में होता है उसकी व्युत्पत्ति सराहनीय होती है।

व्युत्पत्ति से कवि में कुशलता आती है। इसीलिये व्युत्पत्ति को कतिपय विद्वानों द्वारा निपुणता भी कहा गया है।

अभ्यास

अभ्यास क्या है, इसे समझाने के लिए राजशेखर ने 'निरंतर प्रयास करते रहने को अभ्यास' कहा है। अभ्यास करते रहने से कवि के उपयोग में आनी वाली चीजें या बातें उसके सामने प्रकट रहती हैं। अभ्यास के अभाव में कविताओं में गलतियाँ भी हो जाती हैं।

प्रतिभा और व्युत्पत्ति के साथ अभ्यास का भी योगदान हो तो कविता सर्वोत्तम हो पाती है। आचार्यों ने अभ्यास को प्रतिभा का पोषक हेतु माना है। कई बार एक प्रतिभावान कवि की शुरुआती और बाद की रचनाओं में जो अंतर आता है वह व्युत्पत्ति और अभ्यास के कारण आता है।

जो नया कवि है उसे किसी काव्य-रसिक, काव्य-ज्ञानी और विद्वान् व्यक्ति के मार्गदर्शन में अभ्यास कार्य संपन्न करना चाहिए।

© Dr. Amrendra N. Tripathi, SGGS College, Pataliputra University

© Dr. Amrendra N. Tripathi, SGGS College, Pataliputra University